बच्चोंकी मोबाइल या स्क्रीन देखने की लत एक बड़ी समस्या



बच्चों की मोबाइल या स्क्रीन देखने की लत एक बड़ी समस्या है। पर अक्सर कई माता-पिता इस बात पर संतुष्ट होते हैं कि उनके बच्चे स्क्रीन पर एजुकेशनल वीडिया या कुछ अच्छा ही देख रहे हैं। इससे वो सीखेंगे और चीजें समझ पाएंगे। छोटे बच्चों को तो पढ़ाने के लिए अक्सर टीवी पर कविताएं, रंग-बिरंगे एनिमेशन चला दिए जाते हैं। पर ऐसे एजुकेशनल वीडियो देखकर बच्चा हर बार सीख रहा हो, ये जरूरी नहीं है। एक नई स्टडी में सामने आया है कि बच्चों का ध्यान शैक्षिक वीडियो में मौजूद पढ़ाई की सामग्री से ज्यादा उसके पीछे चल रही एनिमेटेड चीजों पर जाता है। इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस और सांता क्लारा यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने बच्चों के वीडियो देखने के तरीके पर एक स्टडी की। इसमें पता चला कि वीडियो में जितने ज्यादा हिलते-डुलते दृश्य होते हैं, बच्चे उसे उतनी ही देर तक देखते हैं, लेकिन उनका ध्यान वीडियो में पढ़ाई से जुड़ी बातों पर कम और पीछे चल रहे एनिमेशन पर ज्यादा रहता है। यानी बच्चा स्क्रीन को लगातार देख रहा है, इसका मतलब यह नहीं कि वह वीडियो में बताई जा रही बातें भी समझ रहा है. रिसचरों ने बच्चों के वीडियो देखने के तरीके को समझने के लिए तीन तरीके अपनाए। सबसे पहले बच्चों के लिए बनाए गए 32 हजार से ज्यादा यू ट्यूब वीडियो का विश्लेषण किया गया. इसके बाद एक प्रयोग किया गया. साथ ही, 6 से 10 साल की उम्र के बच्चों की आंखों की गतिविधियों पर भी नजर रखी गई। इससे यह समझने की कोशिश की गई कि वीडियो देखते समय बच्चों की नजर स्क्रीन के किस हिस्से पर रहती है। वीडियो के विश्लेषण में पता चला कि अगर किसी वीडियो में विजुअल्स 10 प्रतिशत बढ़ा दिए जाएं, तो उसे देखने वालों की संख्या करीब 1.1 प्रतिशत बढ़ जाती है। यानी वीडियो में जितनी ज्यादा हलचल होती है, बच्चे उसे देखने में उतनी ही दिलचस्पी दिखाते हैं. शोधकर्ताओं ने अपने प्रयोग में कुछ शैक्षिक वीडियो में अतिरिक्त एनिमेटेड बैकग्राउंड जोड़े. फिर देखा कि बच्चे किस तरह के वीडियो ज्यादा देखते हैं। नतीजों में पता चला कि बिना एक्स्ट्रा एनिमेशन वाले वीडियो के मुकाबले मध्यम स्तर की हलचल वाले वीडियो को देखने वालों की संख्या 1.6 प्रतिशत ज्यादा थी। वहीं, जिन वीडियो में ज्यादा हलचल थी, उन्हें देखने वालों की संख्या 2 प्रतिशत बढ़ गई। यानी रंग-बिरंगे और हिलते-डुलते दृश्य बच्चों को वीडियो देखने के लिए आकर्षित करते हैं लेकिन इससे यह साबित नहीं होता कि वे पढ़ाई की बातें भी बेहतर तरीके से सीख रहे हैं। स्टडी का सबसे दिलचस्प हिस्सा बच्चों की आंखों की गतिविधियों से जुड़ा था। शोधकर्ताओं ने देखा कि जिन वीडियो में एनिमेटिड बैकग्राउंड था, उन्हें देखते समय बच्चे कम बार स्क्रीन से नजरें हटाते थे। इस वजह से स्क्रीन देखने में उनका समय करीब 3.4 से 3.6 प्रतिशत बढ़ गया, लेकिन जब यह देखा गया कि बच्चे स्क्रीन पर आखिर किस चीज को देख रहे हैं, तो पता चला कि उनका ध्यान ज्यादातर हिलते-डुलते बैकग्राउंड पर था. वे वीडियो में समझाई जा रही पढ़ाई की बातों को उतनी तवज्जो नहीं दे रहे थे.इस स्टडी से माता-पिता और शिक्षकों को एक जरूरी बात समझने की जरूरत है। बच्चा अगर आधे घंटे तक कोई एजुकेशनल वीडियो देख रहा है, तो इसका मतलब यह नहीं कि उसने आधे घंटे तक पढ़ाई भी की है. हो सकता है कि वह वीडियो में चल रहे मजेदार एनिमेशन और रंगों में ही उलझा रहा हो. इसलिए बच्चों के लिए वीडियो चुनते समय सिर्फ यह न देखें कि उसमें कितने अच्छे एनिमेशन हैं या बच्चा उसे कितनी देर तक देखता है. यह भी देखें कि वीडियो में समझाई जा रही बात कितनी साफ है और बच्चा उसे समझ पा रहा है या नहीं. जरूरत पड़ने पर बच्चे से वीडियो के बारे में सवाल पूछें. इससे अंदाजा लग सकता है कि उसने वीडियो से क्या सीखा।

दुनिया भर में क्यों सड़कों पर उतर रही है नयी पीढ़ी



जर्मनी से लेकर इटली तक दुनिया के अलग-अलग देशों में युवा सत्ता को चुनौती दे रहे हैं। कहीं भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन है तो कहीं बेरोजगारी और महंगाई से इस गुस्से की वजह बन रही है। बेशक इन आंदोलनों के मुद्दे अलग-अलग हैं मगर इनका चेहरा एक है. वो चेहरा जिसे दुनिया जेन जी कहती है। यह पहली बार नहीं जब जेन जीं सड़कों पर उतरे हों. नेपाल से लेकर बांग्लादेश तक और केन्या से लेकर मेगाडास्कर तक पहले भी इस जेन जी के आंदोलन हुए हैं। मगर इस बार यूरोप जिस गुस्से की आग में जल रहा है। ऐसा शायद दुनिया के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ. यूरोप प्रदर्शन की आग में जल रहा है। फ्रांस में विरोध प्रदर्शन लगातार तीसरे सप्ताह जारी रहा. तो जर्मनी में ये विरोध हिंसक हो गया। फ्रैंकफर्ट समेत देश के 34 शहरों में प्रदर्शनकारियों की पुलिस ने झड़प हुई, तोड़ फोड़ हुई और कई दुकानों में लूटपाट भी की गई. कुछ ऐसा ही हाल पुर्तगाल, नीदरलैंड, बेल्जियम, इटली और अल्बानिया की सड़कों पर भी दिख रहा है.जेन जी में बढ़ते गुस्से की वजह तलाशने की कोशिश की गई है। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की प्रोफेसरएरिका चेनोवेथ और मैथ्यू सेबुल ने इस रिसर्च का शीर्षक जेन जी क्यों आगे बढ़ रहा है% रखा है. इसके अलावा इसी साल आम नागरिकों के वैश्विक संगठन सिविकस की रिपोर्ट में भी जेन जी के गुस्से और असंतोष पर एक एनालिसिस की गई है, जिसमें बताया गया है कि आखिर युवा पीढ़ी सड़कों पर क्यों उतर रही है.जेन जी उस जनरेशन को कहा जाता है, जिनका जन्म 1997 से 2012 के बीच हुआ है. इन्हें डिजिटल पीढ़ी भी कहा जाता है, क्योंकि इन्होंने इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के विस्तार के बीच आंखें खोली हैं। जर्नल ऑफ डेमोक्रेसी में प्रकाशित रिसर्च के मुताबिक इस जनरेशन का किसी चीज को समझने का अपना नजरिया है। यही इनके असंतोष की वजह भी है। दरअसल इन्होंने वैश्विक आर्थिक संकट, कोविड महामारी, महंगाई जैसी चीजें बहुत नजदीक से देखी हैं ऐसे में जब इन्हें अपने भविष्य में अस्थिरता दिखती है तो इनका गुस्सा फूट पड़ता है. जेन जी के विरोध की शुरुआत एशिया से हुई थी। यहां नेपाल में 26 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रतिबंध की वजह से युवा आक्रोशित हुए. जब पुलिस कार्रवाई में युवाओं की मौत हुई तो प्रदर्शन और व्यापक हो गया। आखिरकार पीएम केपी शर्मा ओली को इस्तीफा देना पड़ा. ऐसा ही बांग्लादेश में हुआ. यहां सरकारी नौकरियों में आरक्षण के खिलाफ छात्र आंदोलन शुरू हुआ। सुरक्षा बलों ने प्रदर्शन को दबाने की कोशिश की तो यह ऐसा भड़का कि सत्ता को ही बदल दिया. श्रीलंका में भी बांग्लादेश की पीएम शेख हसीना की तरह राष्ट्रपित गोटाबाया राजपक्षे को देश छोड़कर भागना पड़ा.अफ्रीका में जेन जी का गुस्सा आर्थिक असमानता की वजह से पनपा. केन्या में जून 2024 में फाइनेंस बिल से इसकी शुरुआत हुई.

भारत के किन इलाकों में सबसे ज्यादा आते हैं तूफान, जानें कहां बहुत खतरा?



भारत के पश्चिमी तट पर पूर्वी तट की तुलना में चक्रवातों से टकराने की घटना आमतौर पर कम होती है. बंगाल की खाड़ी की तुलना में अरब सागर में चक्रवात कम बनते हैं. ऐतिहासिक रूप से हर दो से चार चक्रवातों में से सिर्फ एक ही पश्चिमी तट की तरफ बढ़ता है. गुजरात और महाराष्ट्र ऐसे पश्चिमी राज्य हैं जिनके प्रभावित होने का सबसे ज्यादा खतरा रहता है. पश्चिमी तटीय राज्यों में कभी-कभी गंभीर मौसमी प्रणाली का असर देखने को मिलता है . गुजरात में कच्छ और सौराष्ट्र और महाराष्ट्र के तटीय इलाके खास तौर से जोखिम रहते हैं. जब कोई चक्रवात तट के करीब आता है या फिर तट को पार करता है तो इन क्षेत्रों में तेज हवाएं चल सकती हैं और भारी बारिश होती है. गोवा, कर्नाटक और केरल में चक्रवात के सीधे तट से टकराने की संभावना काफी कम है. हालांकि जब कोई चक्रवात इनके पास से गुजरता है तो इन राज्यों में भी भारी बारिश और तेज हवाएं चल सकती हैं.

भारत के किन इलाकों में सबसे ज्यादा आते हैं तूफान, जानें कहां बहुत खतरा?

चक्रवात का प्रभाव सिर्फ तट तक सीमित नहीं है. तट से टकराने के बाद जब हवा कमजोर पड़ जाती है तब भी इसका बचा हुआ हिस्सा भीतरी इलाकों में आगे बढ़ सकता है और वहां खराब मौसम पैदा कर सकता है. भारी बारिश, जल भराव और आंधी-तूफान तटीय इलाकों से दूर स्थित राज्यों को प्रभावित कर सकते हैं. भीतरी इलाकों में छत्तीसगढ़, तेलंगाना, ? झारखंड, बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश ऐसे क्षेत्र हैं जहां इसका असर हो सकता है. जब कोई कमजोर चक्रवती प्रणाली भीतरी इलाकों की तरफ बढ़ती है तो इन क्षेत्रों में भारी बारिश और आंधी तूफान जैसी स्थिति बन सकती है.

कई शादियां करती है 'स्वर्ग की चिड़िया'



बड्र्स ऑफ पैराडाइज की दुनिया में करीब तीन दर्जन से ज्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें मादा पक्षियों का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए नर पक्षियों के बीच ऐसी खूंखार जंग छिड़ती है, जिसे देखकर इंसान दंग रह जाएंगे। ये मुकाबला किसी कोल्ड वॉर जैसा होता है, जहां हर नर पक्षी दूसरे से ज्यादा चमकदार और हसीन दिखने की कोशिश करता है। मादाएं हमेशा उसी नर को अपना पार्टनर चुनती हैं, जिसके पंख सबसे ज्यादा भड़कीले होते हैं और डांस सबसे दमदार होता है. इन खूबसूरत पक्षियों की दुनिया में पॉलीगाइनस यानी बहुविवाह का राज चलता है। इसका सीधा सा मतलब है कि एक नर पक्षी अपनी शान दिखाने के बाद एक ही ब्रीडिंग सीजन में कई अलग-अलग मादाओं के साथ संबंध बनाता है. सबसे दिलचस्प और हैरान करने वाली बात ये है कि रोमांस और मेटिंग का ये दौर खत्म होते ही नर पक्षी अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेता है। इसके बाद अंडे सेने से लेकर चूजों को पालने-पोसने तक का पूरा बोझ अकेली मादा पक्षी के सिर पर ही रहता है। आखिर इन पक्षियों के पास अपने लुक्स और डांस पर इतनी मेहनत करने का वक्त कहां से मिल जाता है? इसका पूरा श्रेय उनके घर यानी रैनफॉरेस्ट के पर्यावरण को जाता है. न्यू गिनी और ऑस्ट्रेलिया के इन घने जंगलों में फल-फूल, बेरीज और कीड़े-मकोड़े भरपूर मात्रा में उपलब्ध हैं. भोजन तलाशने में ज्यादा मेहनत न करनी पड़ने के कारण नर पक्षियों की ऊर्जा खाने के पीछे बर्बाद नहीं होती. इस बची हुई सारी एनर्जी का इस्तेमाल वो अपनी खूबसूरती को निखारने, लंबे-लंबे पंख उगाने और अपने डांस मूव्स की रिहर्सल करने में करते हैं।

सोनपापड़ी से काजू कतली, जेब संग हालत हुई पतली





दीपावली आते ही घरों में सफाई, बाजारों में सजावट और जेबों में सफाई शुरू हो जाती है। दीपों का पर्व अब केवल आस्था और आत्मीयता का उत्सव नहीं, खरीदारी, दिखावे और प्रतिस्पर्धा का महोत्सव भी बन गया है। कभी मिट्टी के दीये, घर की मिठाइयाँ और परिवार के साथ लक्ष्मीपूजन दीपावली की पहचान थे। अब दीयों से पहले डिजाइन, पूजन से पहले पैकिंग और प्रसाद से पहले फोटोग्राफी की तैयारी होती है। लक्ष्मीजी के स्वागत में घर सजते हैं, लेकिन त्योहार बीतते-बीतते उनकी विदाई से अधिक जेब की विदाई की चर्चा होने लगती है। दीपावली के साथ एक अदृश्य दिवाला भी मनाया जाने लगा है! घर की सफाई के बाद सबसे बड़ी चुनौती सजावट की है। पिछले साल की झालरें इस साल पुरानी पड़ जाती हैं और बंदनवार गृहसज्जा के नए मानदंडों पर खरी नहीं उतरती। अब सवाल यह नहीं कि अपना घर कितना सुंदर है, सवाल यह है कि पड़ोसी के घर से कितना सुंदर है! भक्ति पीछे छूट जाए तो छूट जाए, लेकिन पड़ोसन की तारीफ में अपना नाम पीछे नहीं रहना चाहिए। बाजारों में ऐसी रौनक है कि लगता है, लक्ष्मीजी ने कमल के बजाय शॉपिंग बैग पर सवारी चुन ली है। हर दुकान पर छूट का छप्पर, हर विज्ञापन में ऑफर की ओट और हर खरीद पर उपहार का प्रलोभन। ग्राहक हजार रुपये बचाने के उत्साह में तीन हजार खर्च कर आता है। ऑनलाइन बाजार ने खरीदारी आसान बना दी है। कार्ट में सामान जुड़ता है और बैंक खाते में धन घटता है। खरीदते समय उत्साह, भुगतान के बाद आत्ममंथन और सामान आने पर आत्मग्लानि! अगले दिन सेल का संदेश आते ही संयम की छुट्टी हो जाती है। फ्ली मार्केट ने खरीदारी को रोमांचक खेल बना दिया है। एक मैडम कंदील की दुकान पर मोलभाव कर रही थीं। दुकानदार भी महिला थी। मैडम ने पूछा, आधे में दे दो। दुकानदार बोली, आधे में तो मुझे ही पड़ जाएगी, कमाऊँगी क्या? मैडम ने कहा, सामने वाली दुकान पर सस्ती है। जवाब मिला, तो वहीं से ले लीजिए! गमलों तक बात पहुँची तो हर गमले में कमी और पसंद के गमले में कीमत अधिक दिखाई दी। दुकानदार दाम घटाती रही, मैडम बजट का हवाला देती रहीं। रुपये ऐसे खिंच रहे थे, मानो एक ओर गृहस्थी का बजट हो और दूसरी ओर मेहनत की कमाई! हास्य के पीछे यथार्थ भी है। एक स्त्री सीमित बजट में घर सजाना चाहती है, दूसरी उसी बिक्री से गृहस्थी चलाती है। मोलभाव कीजिए, किंतु किसी की मेहनत का मोल मत घटाइए। मिठाइयों का सफर भी कम दिलचस्प नहीं। कभी घर में गुझिया, लड्डू, शक्करपारे और मठरी बनते थे। फिर बाजार की मिठाइयों ने रसोई में प्रवेश किया और स्वाद के साथ डिब्बे की प्रतिष्ठा भी महत्त्वपूर्ण हो गई। सोनपापड़ी ऐसी सर्वमान्य मिठाई बनी कि उसके डिब्बे ने पुनर्चक्रण का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। एक घर से दूसरे, दूसरे से तीसरे और तीसरे से चौथे घर तक उसकी यात्रा चलती रहती थी। मिठाई खाने से पहले सोचना पड़ता था कि डिब्बा किसने भेजा है और अब इसे किसके यहाँ पहुँचाया जाए! फिर आया काजू कतली का प्रतिष्ठित दौर। सोनपापड़ी ने संबंधों का निर्वाह किया था, काजू कतली ने हैसियत का हिसाब माँगना शुरू कर दिया। अब स्वाद से पहले मिठाई की कीमत का अनुमान लगाया जाता है। आदान-प्रदान कम और उपहार की कीमत का मूल्यांकन अधिक होने लगा है। मानो लक्ष्मीपूजन के साथ सामाजिक लेखा-परीक्षण भी चल रहा हो! सोशल मीडिया ने इस होड़ को नई ऊँचाई दे दी है। किसकी रंगोली सुंदर, किसकी साड़ी चमकदार और किसके घर की लाइटिंग शानदार! पूजा का मुहूर्त निकल जाए तो चिंता नहीं, तस्वीर का मुहूर्त नहीं निकलना चाहिए। दीये जल रहे हैं, कैमरे चल रहे हैं, लेकिन क्या मन के अँधेरे भी दूर हो रहे हैं? बाजार, सजावट और खरीदारी गलत नहीं हैं। समस्या खरीदने में नहीं, अंधी होड़ में है। दीपावली का अर्थ सामर्थ्य से बढ़कर खर्च करना नहीं, अपनी सामर्थ्य के भीतर प्रसन्नता बाँटना है। घर रोशन करने के लिए कर्ज की कालिमा ओढ़ना कैसी समझदारी? इस दीपावली घर सजाएँ, मिठाइयाँ बाँटें और अपनों के साथ आनंद मनाएँ, लेकिन उत्सव की चमक में संवेदना की लौ मद्धिम न पड़ने दें। जरूरतमंद के घर मिठाई पहुँचाना, श्रमिक के परिश्रम का सम्मान करना और अपनों के साथ प्रेम के पल बिताना भी दीपदान है। दीपावली का मूल्य झालरों की लंबाई, उपहारों की कीमत या मिठाई के ब्रांड से नहीं, व्यवहार की मिठास से तय होना चाहिए।



डॉ.अंजना चक्रपाणि मिश्र

दीप जले हर द्वार पर मन में रहे उजास। प्रेम बाँटने से खिले जीवन में मधुमास।।

पिताने आईफोन नहीं दिया तो बिजली के टावरपर चढ़ा लड़का



बच्चों की कोई पसंदीदा चीज न मिले तो उनका उदास होना या नाराजगी जताना स्वाभाविक है। कई बार वे जिद करते हैं, रोते हैं या गुस्सा दिखाते हैं लेकिन जब यही नाराजगी खतरनाक कदम उठाने तक पहुंच जाए, तो माता-पिता के लिए यह चिंता की बात है। हरियाणा के मेवात से सामने आई एक घटना ने इसी सवाल पर सोचने को मजबूर कर दिया है। यहां जहटाना गांव में एक युवक ने आईफोन की मांग पूरी न होने पर ऐसा कदम उठाया कि गांव के लोग घबरा गए। मिली जानकारी के मुताबिक, युवक अपने माता-पिता से आईफोन खरीदने की जिद कर रहा था. जब परिजनों ने उसकी मांग पूरी नहीं की, तो वह नाराज होकर गांव के पास लगे हाईटेंशन बिजली लाइन के टावर पर चढ़ गया। देखते ही देखते वह काफी ऊंचाई तक पहुंच गया। उसे टावर पर चढ़ा देखकर ग्रामीणों में अफरा-तफरी मच गई। लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी. पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की मदद से उसे समझाने की कोशिश की. काफी मशक्कत के बाद युवक को सुरक्षित नीचे उतार लिया गया.यह घटना इस बात की ओर संकेत करती है कि किसी चीज की मांग अगर पूरी न हो और इसकी वजह से गुस्सा और निराशा आए तो ऐसे हालात को संभालना कितना जरूरी है। मनोविज्ञान में इसे फ्रस्ट्रेशन टॉलरेंस कहा जाता है। आसान भाषा में समझें तो इसका मतलब है कि जब हमारी इच्छा पूरी न हो या कोई काम मन के मुताबिक न हो, तो हम उस निराशा और गुस्से को किस तरह संभालें। हर इंसान को जिंदगी में कभी न कभी निराशा का सामना करना पड़ता है। बच्चे को पसंदीदा खिलौना न मिले, मोबाइल इस्तेमाल करने का समय खत्म हो जाए या उसकी बात न मानी जाए, तो उसे बुरा लग सकता है. ऐसे समय में वह अपने इमोशन्स को कैसे संभालता है, यही उसकी फ्रस्ट्रेशन टॉलरेंस को दिखाता है। दरअसल, बच्चों में भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने की क्षमता धीरे-धीरे विकसित होती है.

भारत का लंदन



कोलकाता का ब्रिटिश शासन से गहरा ऐतिहासिक रिश्ता रहा है। यह शहर साल 1772 से 1911 तक ब्रिटिश भारत की राजधानी था। उस समय यहां प्रशासन, व्यापार और शिक्षा से जुड़ी कई महत्वपूर्ण गतिविधियां होती थीं। अंग्रेजों ने शहर में अपने रहने, काम करने और प्रशासनिक जरूरतों के हिसाब से कई भव्य इमारतें बनवाईं. इन इमारतों में यूरोपीय वास्तुकला की झलक साफ दिखाई देती है। इसी ऐतिहासिक विरासत और ब्रिटिश दौर के प्रभाव के कारण कोलकाता को लंदन ऑफ इंडिया कहा जाने लगा, हालांकि, यह एक लोकप्रिय उपनाम है, कोई आधिकारिक सरकारी दर्जा नहीं। कोलकाता की पहचान की बात हो और विक्टोरिया मेमोरियल का नाम न आए, ऐसा हो नहीं सकता। सफेद संगमरमर से बनी यह भव्य इमारत शहर के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में शामिल है. इसका निर्माण महारानी विक्टोरिया की याद में कराया गया था। इमारत के चारों ओर फैले हरे-भरे बगीचे और अंदर मौजूद संग्रहालय इसे खास बनाते हैं। यहां पर्यटक ब्रिटिश भारत के इतिहास से जुड़ी कई चीजें देख सकते हैं। विक्टोरिया मेमोरियल के पास स्थित सेंट पॉल कैथेड्रल भी कोलकाता की ऐतिहासिक धरोहरों में शामिल है। इसका निर्माण 1839 से 1847 के बीच हुआ था. चर्च की ऊंची मीनार, रंगीन कांच की खिड़कियां और गोथिक शैली की बनावट इसे बेहद आकर्षक बनाती है। इसकी वास्तुकला में यूरोपीय प्रभाव साफ नजर आता है.बीबीडी बाग इलाके में स्थित राइटर्स बिल्डिंग कोलकाता की ऐतिहासिक इमारतों में से एक है। ब्रिटिश दौर में इसका इस्तेमाल ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों के कार्यालय के रूप में किया जाता था कोलकाता की यात्रा हावड़ा ब्रिज देखे बिना अधूरी मानी जाती है। हुगली नदी पर बना यह विशाल पुल शहर की पहचान बन चुका है। इसे रवींद्र सेतु के नाम से भी जाना जाता है। नदी के किनारे प्रिंसेप घाट पर शाम बिताना भी अच्छा अनुभव हो सकता है। यहां से हुगली नदी और विद्यासागर सेतु का खूबसूरत नजारा दिखाई देता है। वहीं, शहर का जनरल पोस्ट ऑफिस अपने विशाल गुंबद और भव्य बाहरी बनावट के लिए जाना जाता है. इन इमारतों को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि ब्रिटिश शासन के समय कोलकाता कितना महत्वपूर्ण प्रशासनिक केंद्र था. कोलकाता की यात्रा हावड़ा ब्रिज देखे बिना अधूरी मानी जाती है. हुगली नदी पर बना यह विशाल पुल शहर की पहचान बन चुका है. इसे रवींद्र सेतु के नाम से भी जाना जाता है. नदी के किनारे प्रिंसेप घाट पर शाम बिताना भी अच्छा अनुभव हो सकता है. यहां से हुगली नदी और विद्यासागर सेतु का खूबसूरत नजारा दिखाई देता है.

दीपावली सेलिब्रेशन- पटाखों से रकुल का कॉम्पटीशन



रामायण म शूपंणखा का भूमिका निभान वालीं एक्ट्रेस रकुल प्रीत सिंह ने दीवाली सेलिब्रेशन से अपनी लेटेस्ट तस्वीरें शेयर की हैं जिसमें वह बहुत खूबसूरत लग रही हैं। बॉलीवुड में दीवाली का सेलिब्रेशन शुरू हो गया है और सितारे अपने ग्लैमरस दीवाली लुक की तस्वीरें शेयर कर रहे हैं। हाल ही में, एक्ट्रेस रकुल प्रीत सिंह ने भी अपनी लेटेस्ट फोटोज से ध्यान खींचा है। रकुल प्रीत सिंह ने इंस्टाग्राम अकाउंट पर दीवाली पार्टी की तस्वीरें शेयर की हैं जिसमें वह ग्लैमरस लुक में कैमरे के सामने स्टनिंग पोज दे रही हैं। रकुल प्रीत सिंह ने फोटोज शेयर करते हुए मजेदार कैप्शन दिया है। उन्होंने लिखा, यहां पटाखों से मुकाबला करने नहीं आई हूं, पर कभी-कभी में भी कमाल कर देती हूं। रकुल प्रीत सिंह के लुक की बात करें तो उन्होंने ऑरेंज कलर की मिरर वर्क साड़ी पहनी है जिसे उन्होंने स्लीवलेस ब्लाउज से स्टाइल किया है। एक्ट्रेस ने अपने लुक को चोकर सेट से स्टाइल किया है। इयररिंग्स को स्किप करके उन्होंने हाथों में कंगन पहना है। मिनिमल मेकअप और खुले बालों में रकुल हसीन लग रही हैं। फोटो सीरीज में रकुल प्रीत सिंह ने अपना ट्रेडिशनल लुक फ्लॉन्ट किया और एक से बढ़कर एक पोज दिए। उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं और लोग उनकी जमकर तारीफ कर रहे हैं। रकुल 5 नवंबर को सिनेमाघरों में आ रही पौराणिक फिल्म रामायण में नजर आएंगी। वह फिल्म में रावण की बहन शूर्पणखा का किरदार निभा रही हैं। इस फिल्म का निर्देशन नितेश तिवारी ने किया है।